ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

इस्लामी धार्मिक रूढ़िवाद और आतंकवाद

[1]मनीष पटेल
[1]सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र, राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

धार्मिक रूढिवाद किसी धर्म के व्यक्ति द्वारा उस धर्म के मूल सिद्धान्तों में विश्वास उनके मौलिक सिद्धान्तों में आस्था या प्रतिबद्धता का वह रूप हैं जो धर्मांधता की सीमाओं को छूती है। जब किसी धर्म–विशेष के मतावलम्बियों द्वारा सारी दुनिया में अपने परम्परागत धर्म को अंतिम सत्य रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जाता है तो यह धार्मिक रूढिवाद कहलाता है।

Keywords- धार्मिक रूढिवाद, हितों को त्याग, व्यक्तिगत हितों की पूर्ति, वैज्ञानिक दृष्टि, सामाजिक आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण। धार्मिक रूढिवाद धर्म का विलोम है, धर्म का शोषक है, जो सामान्य हितो को त्याग कर व्यक्तिगत हितों की पूर्ति हेतु धर्म को भ्रष्ट माध्यम के रूप में प्रयोग करता है। धार्मिक रूढिवाद विवेक सम्मत एवं वैज्ञानिक दृष्टि का विरोधी और परम्परोन्मुख होता है इस दृष्टि से यह दुनिया के लगभग सभी देशों में नवीनता एवं परिवर्तन का विरोध करके सामाजिक आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को बाधित करता है।

धार्मिक रूढिवाद : वैश्विक समस्या – 1979 में ईरान मे अयातुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में धार्मिक रूढिवाद की शुरुआत हुई। धीरे–2 यह रूढिवादिता विश्व के अनेक देशो में फैल गई। हाल के वर्षों में इसने विश्व सभ्यता के समक्ष अनेक चुनौतिया खड़ी कर दी है जैसे–

1. धार्मिक रूढिवाद ने समकालीन विश्व में धार्मिक पुनर्उत्थान की प्रवृत्ति को तीव्र किया जिससे धर्म निरपेक्षीकरण की प्रक्रिया बाधित हुई और आधुनिक समाज के निर्माण का प्रयास कमजोर हुआ है।
2. इसने विश्व के कमोवेश सभी देशों में साम्प्रदायिक तनाव एवं संघर्ष में वृद्धि को संभव बनाया है और वैश्विक स्तर पर सभ्यताओं के मध्य संघर्ष की संभावना को पुष्ट किया है। भारत में हिन्दू मुस्लिम संघर्ष; मध्य पूर्व में इस्लाम, जुडाईज्म और पश्चिमी क्रिश्चियन के बीच संघर्ष; पाकिस्तान में शिया एवं सुन्नी के बीच संघर्ष या फिर भारत के पंजाब में सिख एवं डेरा सच्चा सौदा के बीच संघर्ष इस तथ्य को परिलक्षित करते है।
3. विश्व के लगभग सभी देशों में धार्मिक रूढिवाद ने विवके सम्मत एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विरोध करके धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के समक्ष चुनौती प्रस्तुत की है।

धार्मिक रूढ़िवादः लक्षण– धार्मिक रूढ़िवाद के निम्न लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं–

1. एक धार्मिक रूढ़िवादी अपने धर्म समुदाय अथवा उनसे जुड़े विश्वास व्यवस्था को अनिवार्य, यथेष्ट तथा पूर्णतः प्रमाणित मानता है।

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

2. रूढिवादी कभी समझौतावादी नहीं होते हैं बल्कि अपने विश्वास में धर्मान्ध एवं स्वरूप में आक्रामक होते हैं।

3. धार्मिक रूढ़िवाद के सिद्धान्त अनुल्लंघनीय, आक्षरिक निरंकुश तथा बाध्यकारी होते हैं। यह केवल अधिरोपण की भाषा ही समझता है और अपने मत को सही मानते हुए समस्त समाज को उस मत को मानने पर बल देता है।

4. धार्मिक रूढ़िवाद का स्वयं का मत होता है वह भले धर्म में हो या न हो परन्तु रूढिवाद अपने मत को तर्क द्वारा या धर्म की पुनर्व्याख्या द्वारा धर्मसम्मत कर देता है।

5. धार्मिक रूढ़िवाद विज्ञान एवं विवेकवाद दोनों का अस्वीकार करता है ।

6. धार्मिक रूढ़िवादी अपने व्यवहार में उग्रता को प्रदर्शित करते हैं।

धार्मिक रूढ़िवाद की उत्पत्ति के कारण –

वैश्विक स्तर पर धार्मिक रूढ़िवाद की घटना के कई कारण रहे है, जैसे–

1. तीव्र सामाजिक परिवर्तन से उत्पन्न सामाजिक उथल पुथल और पहचान–संकट धार्मिक रूढ़िवाद के उद्भव का एक प्रमुख कारण रहा है। क्योंकि यह न केवल पहचान संकट का समाधान प्रस्तुत करता है बल्कि एक अच्छे पूर्ववर्ती युग के वापसी का वादा भी करता है।

2. धर्म आधारित नृजातिकेन्द्रीयता की भावना एवं इसकी प्रतिक्रिया भी धार्मिक रूढ़िवाद के उद्भव हेतु प्रमुख रहा है। इस्लाम में शिया–सुन्नी संघर्ष और भारत में हिन्दू–मुस्लिम संघर्ष के पीछे यह एक प्रमुख कारण रहा हैं।

3. रूढ़िवाद व्यक्ति या संगठनों द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयासों को व्यापक स्तर पर धार्मिक रूढ़िवाद के उद्भव एवं प्रसार के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। इस्लामिक रूढ़िवाद के प्रसार में ओसामा बिन लादेन का प्रयास इसका प्रमुख उदाहरण है।

4. विभिन्न व्यक्तियों या राजनीतिक दलों द्वारा सत्ता में बने रहने या सत्ता की प्राप्ति हेतु मतों को लामबंद करने एवं जनसमर्थन को प्राप्त करने की दिशा में धार्मिक भावना का प्रयोग भी धार्मिक रूढ़िवाद के उद्भव का एक प्रमुख कारक रहा है।

इस्लाम का धार्मिक रूढ़िवादिता से ग्रस्त होना– इस्लाम भी धार्मिक रूढ़िवादिता से ग्रस्त है। इस्लाम के उदय के समय की तत्कालीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में बनाए कुछ नियम कानून आज अप्रासंगिक हो गये हैं परन्तु इस्लाम धर्म की रूढ़िवादी ताकतें उसे वर्तमान सामाजिक सांस्कृतिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में समायोजित नहीं करना चाहती। इस्लाम उदय के साथ ही जेहाद अर्थात धर्मयुद्ध की अवधारणा समाज में आ गयी थी और आज 2500 से अधिक वर्ष गुजरने के बावजूद यह वजूद में है। 21 वी सदी में धार्मिक आतंकवाद विशेष रूप से इस्लामी आतंकवाद विश्व के लिए आज सबसे बड़े खतरे के रूप में सामने आया है। अलकायदा, आई० एस०, बोकोहरम, हरकत उल असार व सिमी सभी संगठनों के अनुयायी इस्लाम को मानने वाले ही है।

धार्मिक आतंकवाद– धार्मिक आतंकवाद इजराइल में पैदा हुआ है लेकिन ''हागानाह'' को आधुनिक धार्मिक आतंकवादी संगठन का पैतृक संगठन माना जाता है जिसकी स्थापना 1920 में हुई। ''हागानाह''

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

ने धार्मिक आतंकवाद के पाँच नियम निर्धारित किए है। आश्चर्य की बात यह है कि इन नियमों व सूत्रों को आंख बन्दकर दुनिया का हर धार्मिक आतंकवादी संगठन आज भी पालन करता है। ये महत्वपूर्ण नियम है :

- धर्म को लोगों की पहचान और उनके अस्तित्व की सुरक्षा से जोड़ना।
- 'सिर्फ स्वसमाज धर्मावलम्बियों में भाई–चारा हो सकता है' – उन्माद की हद तक इस विचारधारा को स्थापित करना ।
- लोगों के अन्दर यह भावना विकसित करना कि उनके धर्म के अलावा अन्य सभी धर्मो के लोग उनके दुश्मन हैं।
- लोगों में यह विश्वास उत्पन्न करना कि दुनिया में सबसे प्राचीन और गौरवशाली धर्म उनका ही है अन्य धर्म निष्कृष्ट व भ्रष्ट है।
- लोगों की भावनाओं को अपने धर्म के प्रति इतना उग्र कर देना कि उन्हें अपने धर्म के लिये कुछ भी करने में हिचक न हो।

जहां आतंकवाद के दूसरे तरीके बेहद खर्चीले और कम निश्वसनीय हैं वहीं धार्मिक आतंकवाद कम खर्चीला और ज्यादा विश्वसनीय है आतंकवाद के दूसरे रूपों में जहाँ अपना लक्ष्य निश्चित रहता है, वही धार्मिक आतंकवाद का कोई निश्चित 'वर्ग–समूह' या लोगों का 'उम्र–समूह' नहीं होता।

इस्लामी आतंकवाद :–

धार्मिक आतंकवाद का एक महत्वपूर्ण पक्ष इस्लामी आतंकवाद है। ''मुसलमानों'' के इलाकों पर यूरोपीय साम्राज्य वादियों के नियंत्रण के प्रतिक्रिया स्वरूप 19 वीं शताब्दी में इस्लामी कट्टरपंथ आरम्भ हुआ। जब पश्चिमी और इस्लामी संस्कृतियां टकरायी तो मुसलमानों को लगा इस्लाम खतरे में है। प्रतिक्रिया स्वरूप इस्लामपंथियों ने अपने धर्म के प्रचार प्रसार और अनुपालन के लिए पहल शुरू की।

इस्लाम के नाम पर आतंकवाद की शुरुआत 1980 में अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप के बाद वहाँ के मुजाहिदीन के द्वारा की गई जिसे अमेरिका व पाकिस्तान का समर्थन मिला। अफ़ग़ानिस्तान संकट (1979–88) के दौरान पाकिस्तान, सीमा पर कई सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित कर वहाँ पर आतिंकवादियों को प्रशिक्षण दिया गया है जो आज कश्मीर, चेचन्या, तजाकिस्तान, मिश्र, अल्जीरिया आदि आदि स्थानों पर जेहाद चला रहे हैं।

विश्व में लगभग 400 से अधिक आतंकवादी संगठन वर्तमान समय में सक्रिय हैं जिसमें आधे से अधिक आतंकवादी संगठन इस्लामी विचारधारा रखने वाले हैं। भारत में भी इस समय दो दर्जन से अधिक इस्लामी आतंकवादी संगठन सक्रिय है, इनका मात्र एक उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व में इस्लामी राज्यों को संगठित कर एक इस्लामिक विश्व की स्थापना करना था। ''इस्लाम में विरोधियों के विरुद्ध जेहाद या धार्मिक युद्ध के नाम पर इस्लामी आतंकवादी संगठन अपने लक्ष्यों की पूर्ति के लिए कार्य कर रहे हैं। वस्तुतः इनके संगठन का आधार धार्मिक भावना या इस्लाम नहीं है बल्कि इनके राजनीतिक लक्ष्य है जैसे फिलिस्तीन, कश्मीर, चेचन्या आदि सक्रिय मुस्लिम आतंकवादी संगठन'' यह संगठन परस्पर इस्लाम के नाम पर जुड़कर विश्व के मुस्लिम राष्ट्रों से धन एवं सहानुभूति चाहते हैं स्पष्ट है कि यह

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

संगठन धर्म को लाभ एवं हिंतों के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। ये संगठन धार्मिक जूनून उत्पन्न कर बेरोजगार, गरीब, अभावग्रस्त, अशिक्षित परन्तु उत्साही मुस्लिम युवकों को आकर्षित करते हैं तथा वह व्यक्ति सच्चा व अच्छा आतंकवादी सिद्ध होता है जोकि जेहाद के नाम पर स्वयं की कुर्बानी देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता है।

इन आतंकवादियों के प्रशिक्षण के लिए कैम्प व शोध विश्वविद्यालय खुले हुए हैं। ''विश्व के कोने–2 से जेहाद के लिए भर्ती किये गये मुस्लिम युवक कट्टरपंथी धार्मिक प्रेरणा, सैनिक व संचार सम्बन्धी ट्रेनिंग लेते हैं। इसमें इन्हें हथियारों का प्रशिक्षण, शारीरिक प्रशिक्षण, गोला बारूद का इस्तेमाल और आतंकवादियों को गुप्त संदेश भेजने, भू–उपग्रह के माध्यम से संचार व्यवस्था स्थापित करने की ट्रेनिंग दी जाती है।

आज निसन्देह धार्मिक आतंकवाद की अगुवाई इस्लामी आतंकवादी संगठनों द्वारा की जा रही है। कुछ प्रमुख इस्लामी आतंकी हमले निम्नवत हैं–

क्रमांक	तिथि	स्थान	हमले की प्रकृति	मौतों की संख्या
1	11.09.2001	न्यूयार्क	वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आत्मघाती हमला	3000
2	12.10.2002	बाली	होटल में बल विस्फोट	202
3	11.03.2004	मेड्रिड	ट्रेन में बम विस्फोट	193
4	07.07.2005	लंदन	ट्रेन व बस में आत्मघाती हमला	52
5	07–09.01.2015	पेरिस	गोलीबारी हमला	17
6	13–14.11.2015	पेरिस	थिएटर व स्टेडियम में हमला	130
7	22.03.2016	ब्रसेल्स	एअरपोर्ट व मेट्रो स्टेशन पर बम विस्फोट	32
8	28.06.2016	इस्तांबुल	हवाई अड्डे पर हमला	45
9	14.07.2016	नाइस	बास्टील दिवस पर ट्रक से हमला	86
10	22.03.2017	लंदन	वाहन से हमला	06
11	22.05.2017	मैनचेस्टर	संगीत ऐरेना पर आत्मघाती हमला	22

इस्लाम की वास्तविक स्थिति :– जो इस्लाम अनाथों और अपरिचितों के साथ भी प्रेम और मृदु व्यवहार की अपेक्षा करता है, उनके दु:ख में शरीक होने की बात करता है। क्या वह धर्म निर्दोष लोगों के हत्या की बात कर सकता है? यद्यपि यह कटु सत्य है कि आज दुनिया में जो भी आतंकवादी घटनाएं सुनायी दे रही है उसमें पकड़े गये युवक इस्लाम धर्म से ही वास्ता रखते हैं। इसमें दोष इस्लाम का नहीं, उन व्यक्तियों का दोष हैं, जिन्होंने इस्लाम को ठीक से नहीं समझा।

दरअसल इस्लाम का आतंकवाद से कोई लेना देना नहीं है। आतंक का कोई धर्म नहीं होता। आतंकवादी आतंक द्वारा समाज में भय पैदा करना चाहते हैं। कट्टरपथी धर्म के नाम पर धर्म का विकृत रूप भले–भाले नवयुवकों के सामने प्रस्तुत करते हैं और उनकी गरीबी का फायदा उठाकर उन्हें आतंक की भट्टी में झोंक देते हैं। ऐसे युवकों के दिमाग में यह बात कूट–कूट कर भर दी जाती है

ISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

कि अगर तुम मारे जाओगो, तो तुम्हे जन्नत मिलेगी और जीते जी धर्मविजयी कहलाओगे तथा तुम्हारी गरीबी समाप्त हो जायेगी।

आज जो आतंकवादी घटनाएं हो रही है। ये प्रचारित किया जा रहा है कि ये जिहाद है। जिहाद का अर्थ धर्म युद्ध अर्थात धर्म (सत्य) की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करो। जिसका उद्देश्य है– सत्य के मार्ग की बाधाओं को दूर करना।

अन्य धर्मों की तरह इस्लाम ने भी विश्व सभ्यता को बहुत कुछ दिया है लेकिन उसी मानव धर्म की आड़ में आज मानव सभ्यता को विनाश के कगार पर ले जाने का कार्य हो रहा है। इससे निबटने के लिए सभी धर्मों के लोगों को मिलकर सामूहिक प्रयास करना होगा। तब ही हम इस विभीषिका से मुक्त हो सकेंगे।

संदर्भ सूची–

1. पाण्डेय, एस. एस. (2010); 'समाजशास्त्र'
टाटा मैक्ग्राहिल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ०– 7.20
2. शाही, सविता (2010); 'धार्मिक आतंकवादः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन',
भारतीय मुसलमान : दशा और दिशा (संपादित), राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ0 9
3. शुक्ल, डा. अमित (2010) 'आतंकवाद और साम्प्रदायिक सौहार्द',
भारतीय मुसलमान : दशा और दिशा (संपादित), राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ0 89
4. सिंह, डा. राम प्रताप, (2010), 'इस्लाम कैसे है आतंकवाद',
भारतीय मुसलमान : दशा और दिशा (संपादित), राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ097
5. राय, प्रदीप कुमार (2008), 'इस्लामिक आतंकवाद और इसका भारतीय सुरक्षा पर प्रभाव', प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, अगस्त, पृ0 70
6. यूरोप में इस्लामी आतंकवाद
https://en.wikipedia.org
7. रूश्दी, सलमान (2017), ' इस्लामी आतंकवाद भी इस्लाम का एक रूप है',
www.ichowk.in
8. इस्लामी आतंकवाद इतिहास
https://www.hmoob.in
9. शर्मा, जी.एल. (2015) 'सामाजिक मुद्दे'
रावत पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली